

संस्कृत  
सप्तमः पाठः

(1)

1.) अरुच्य कृत्यं न विद्वान्नि शीतमुष्णं भयं रतिः।  
समृद्धिरसमृद्धिर्षा अ वे पण्डित उच्यते॥

अर्थ) जिसके कार्य ठंडा, गर्मा, भय, धन, शक्ति, भूमिरी  
गरीबी कोई वाक्य नहीं होती उसे पंडित कहते हैं।

2.) तत्त्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम्।  
उपायज्ञः समुप्याणां नरः पण्डित उच्यते॥२॥

अर्थ) सभी जीवों के तत्वों को जानने वाले सभी कर्मों के  
अभ्यास को जानने वाले तथा मनुष्यों के उपाय को  
जानने वाले मनुष्य को पंडित कहते हैं।

3.) अनादृतः प्रविशति अपृष्ठो बहुभाषते।  
अविश्वस्तं विश्वसिति मूढचैत नराधमः॥३॥

अर्थ) जो बिना बुलाये प्रवेश कर जाता है। बिना बोले  
बहुत बोलता है। न विश्वास करने वाले मनुष्यों पर  
विश्वास करता है। उसे मुख तमा पोपी नर कहा जाता  
है।

4.) एको धर्मः परं श्रेष्ठः श्रेष्ठेका शान्तिरुत्तमा।  
विद्वेक्षेका परमा तृधिया अहिंसेका सुखावहा॥४॥

अर्थ) एक धर्म श्रेष्ठ होता है। एक श्रेष्ठ शान्ति का उत्तम  
मार्ग होता है। एक विद्या सै परम तृप्ति होती है। तथा  
एक अहिंसा सुखदायक होता है।

5.) त्रिविधं नरकस्येह द्वारं नारायणमात्मनः।  
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रैशं त्यजेत्॥

अर्थ) नरक के काम, क्रोध, लोभ ये नरक के वि तीन  
दरवाजे होते हैं। इनका जो उच्छेद का नारा कर देते हैं  
आतः इन तीनों का परित्याग कर देना चाहिए

6) वर दोषाः पुरुषोतेह हातव्या भूतिभिच्छता।  
निन्द्या तन्द्या मयं क्रोध आलस्यं दीर्घ सुखता।

अर्थ पुरुषार्थ चाहने वाले व्यक्ति को नीहा, लांछा (न सोने-  
न आगने की स्थिति) भय, क्रोध आलस्य तथा दीर्घसुखता  
- (कोई कार्य को आलस्यपूर्वक देर से करना) इन दस दोषों  
का परित्याग कर देना चाहिए।

7) सत्येन रश्मते धर्मी विद्याभोगेन रश्मते।  
भूजया रश्मते रूपं कुलं वृतेन रश्मते॥

अर्थ सत्य से धर्म की रक्षा होती है। भोग से विद्या की रक्षा  
होती है। श्रम से रूप की रक्षा होती है। वृत्ति से कुल  
की रक्षा होती है।

8) अनुलभा पुरुषा राजन् स्वतः प्रियवादिनः।

अप्रियमस्तु परमस्तु वक्ता श्रोता च दुर्लभाः।

अर्थ:- हे राजन् प्रिय वचन बोलने वाले आसानी से मिल जाते  
हैं किन्तु अप्रिय तथा कलमाशकारी वचन बोलने वालों या  
सुनने वाले दोनों का आभाव हो जाता है।

9) पूजनीया महाभागाः पुत्राश्च गृहशीलमाः।

स्त्रियाः प्रियो गृहस्थो मतास्तरमादृश्या विरोधताः॥

अर्थ- स्त्रिया पूजनीय होती हैं। घर की लक्ष्मी होती हैं।  
घर की दीपक होती हैं। अतः इनकी विरोध रूप से रक्षा  
करनी चाहिए।

10) अकीर्तिं विनश्यदन्ति हन्त नर्था पराक्रमः।

हन्ति नित्यं धमा शोकाभाप्यारो हन्तशाल्यवाम्॥

अर्थ विनश्वर अपमान का नाश होता है। पराक्रम से  
अनहोनी का नाश होता है। धमा से शोक का नाश  
होता है तथा आचरण से अलक्षणा का नाश होता  
है।